॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे विधाता! वह समय किस काल में आएगा, जब वेद मन्त्रों का पाठ, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के कण्ठ में होगा, जब माता गायत्री का महान् स्वरों में गायन गाया जाएगा। आज हम समय का परिवर्तन चाहते हैं। हे देव! हमारे समक्ष उस समय को प्रकट करो, जहाँ गम्भीर व्यक्ति हों, जहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक वस्तु को विचारने वाला हो। हे विधाता! हमें उस समाज की आवश्यकता नहीं, जहाँ अभिमान हो, तथा अपने से बड़ा किसी को न मान रहा हो। हे विधाता! जब ऐसे ऐसे अभिमानी संसार में उत्पन्न हो जाएँगे तो उनका अभिमान आपके अन्तरिक्ष में रमण करेगा। यह प्रतीत नहीं कि वह अभिमान किस-किस मानव को नष्ट भ्रष्ट कर देगा। हे विधाता! हमें तो वे व्यक्ति चाहिए, जो निरभिमानी हो, विद्या से परिपक्व हों अर्थात् जिनके पास अनन्त विद्या हो। हे देव! हे मित्र! हे सखा! हम आपकी शरण में आए हैं। हमें उस महत्व को प्रदान करो, जिससे हम महान् बनें, विचित्र बनें, यौगिक बनें।

हे प्रभो! तू कल्याण करने वाला है। तू संसार को उज्ज्वल बनाता है, तेरी महत्ता इस संसार में ओत-प्रोत है। जहाँ हमारे नेत्र जाते हैं, वहाँ तुम्हारा ज्ञान-विज्ञान इतना अनुपम और विलक्षण है, कि जिसे ऋषि तो बहुत कुछ जान भी सकते हैं, परन्तु मानव तो हृदय से उच्चारण करता-करता संसार से चला जाता है। हे परमात्मन्! आपने इस संसार को रचाया है, इसका कल्याण करो, हम तेरी शरण में आए हैं, तेरी महत्ता चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 563 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 638
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. उपनयन	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-22
4. याग व भूः, भुवः, स्वः	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द जी महाराज	23-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 15-8-2019, दिन वृहस्पतिवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के प्राङ्गण में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

आप सभी को रक्षाबन्धन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

उपनयन

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। मानो ये जो ब्रह्माण्ड त्रिवर्धा में दृष्टिपात आ रहा है ये सर्वत्र उस परमपिता परमात्मा का सन्निधान मात्र से ही क्रियाकलाप हो रहा है। जितना भी यह क्रियाकलाप हो रहा है मानो उसके मूल में, इसके गर्भ में उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन होता रहता है अथवा उसके गुणों का गुणवादन और उसकी प्रतिभा हमारे में समाहित हो जाए। हमारे वे परमपिता परमात्मा हमारे हृदयों में भी कुछ ना कुछ महानता का हमें प्रदान करते रहें। मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्रः नाना उस परा और अपरा विद्या दोनों के सम्बन्ध में प्रायः अपनी विवेचना करता रहता है और प्रत्येक मानव उसी की आभा में निहित हो जाता है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्रः क्या कह रहा है क्योंकि वेद मन्त्र तो अपने में अनूठा माना गया है। मानो जिसका कोई भी जिसके रूपों में प्रतिपादित नहीं हो रहा है। तो इसलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का प्रायः हम वर्णन करते रहते हैं और उसकी महती को जानते रहते हैं क्योंकि उसकी महानता हमारे हृदयों में ओत-प्रोत हो रही है। तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया।

आज का हमारा वेद मन्त्रः मानो देखो प्रथम मन्त्रों का उद्गीत गाता रहता है। ये जो मन्त्रार्थ हैं उद्गीत कहलाते हैं। हमारे यहाँ चारों वेदों की जो प्रतिभाएँ अथवा शाखाओं ग्रन्थों की प्रतिभा इन पोथियों का अपना महत्त्व मानव के हृदयों में मानो वह घटित रहा है। आज मैं विचार ये देने आया हूँ कि मैं ऋषि-मुनियों के विशेष विचार न प्रगट करता हुआ आज तुम्हें मैं उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके अपना-अपना सन्देश अथवा अपना-अपना उद्गीत गाने के लिए उन्होंने मानव को प्रेरित किया है अथवा प्रेरणा दी हैं। तो आज मैं तुम्हें उस विद्यालय ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि प्रायः अपने में अनुसन्धान करते रहे हैं और नाना प्रकार का अन्वेषण करने के पश्चात् वे मानो मौन प्रवृत्ति में परिवर्तित हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो मैं तुम्हें उस सभा में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैं कई समय से भगवान् राम की चर्चाएँ कर रहा था। भगवान् राम का जो जीवन रहा है वह बड़ा अनूठा रहा है तो मानव को त्याग और तपस्या में परणित हो जाना चाहिए। जब मानव त्याग और तपस्या से अपने जीवन को व्यतीत करता है तो उस मानव को प्रभु की एक महानता का उसे दर्शन होता है और उन दर्शनों में ओत-प्रोत हो करके अपने मानवीयता में परणित हो करके इस सागर से वह पार हो जाता है।

महर्षि वशिष्ठ मुनि द्वारा चारों विधाताओं का उपनयन संस्कार

आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज माता अरुन्धती प्रायः ब्रह्मचारियों को ओजस्वी और तेजस्वी बनाना और अपनी मानवीयता का उन्हें दर्शन कराना ये प्रायः उनका मुख्य क्रियाकलाप रहा है। चिन्तन और मनन करने का भी एक यही स्वरूप माना गया है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल ये क्या भगवान् राममम् ब्रहे व्रतम्। मानो देखो ये चारों विधाता

पिता की आज्ञा पा करके माता के आदेशानुसार मानो उन्होंने बेटा! देखो विद्या आरम्भ के पूर्व उन्होंने गृह मानो देखो यज्ञोपवीत उसे कहा जाता है वह पवित्र है, वह परम पवित्र कहलाता है। वास्तव में तो परब्रह्म परमात्मा ही मानो सर्वत्रता में विद्यमान रहते हैं। परन्तु जहाँ उनका समन्वय रहता है वहाँ ऋषि-मुनियों का एक समूह उनकी सजातीयता भी रही है। मेरे प्यारे! देखो उपनयन कहते हैं जो ऊपर मानों उसमें परणित होने वाला है और देखो हमें उपबन्धनम् धारण करना है। मेरे पुत्रों! देखो यज्ञम् भविताम् देवाः आचार्यजनों ने जब इस प्रकार मानो उपनयन को प्रदान किया। ब्रह्मचारियों के हृदयों में उपनयन का बड़ा महत्त्व माना गया है क्योंकि वह जो प्रेरणा है और प्रेरणा का स्त्रोत मानो ये सूर्य पृथ्वी देवत्याम्। मानो देखो उनका जो प्रेरणा का स्त्रोत है वह सूर्य, चन्द्रमा दोनों मिल करके तो उद्गीत गाते हैं। उस गीतत्त्व को हमें प्राप्त कराइए। मेरे प्यारे! देखो उपनयन संस्कार जब प्रारम्भ हुआ तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा इस याग का प्रारम्भ हुआ जिसे नामोकरण क्या जिसे मेरे प्यारे! देखो अमृतम् ब्रह्मा वयीस्वत्म् ब्रह्मा। मेरे पुत्रों! देखो जहाँ ऋषि-मुनियों का समूह विद्यमान है उसी आसन पर विद्यमान हो करके महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के विद्यालय में और मुनिवरों! देखो वहाँ नाना प्रकार की शिक्षा जहाँ प्रारम्भ की जाती है। वहाँ एक अनुष्ठानवेत्ता जागरूक हो करके यजमान अपने में देखो सार्थिक वाक्य उच्चारण करता चला जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो आचार्य के समीप चारों ब्रह्मचारी और भी नाना ब्रह्मचारी अङ्ग-सङ्ग विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो उनका उपनयन कराने का समय आया। उन्होंने देखो महर्षि रूचिति मुनि महाराज को आज्ञा दई और रूचिति मुनि से कहा कि इनका यजो संस्कार किया जाए। मेरे प्यारे! देखो वेद मन्त्रों की ध्वनियों को एकत्रित करके लाए। उन्होंने उस याग को पूर्ण कराने के लिए तत्पर हुए—यागाम् रुद्रम् भविताम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो जब उपनयन संस्कार होने लगा, अग्निहोत्र हुआ तो उन्होंने सुन्दर अपना

विचार बनाते हुए यागों में परणित बह्मे व्रतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो एक सूत्र को धारण करना है जिसमें हमारा वेद आरम्भ हो जाए। तो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने, मेरे प्यारे! देखो उपनयन संस्कार कराया, उपनयन ब्रहे उपनयनम् ब्रहे उपवर्णनम् ब्रह्मा उपीसाकल्यम् ब्रीहि वृतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो जब उपनयन संस्कार का समय आया तो नाना ब्रह्मवेत्तओं ने वहाँ याग का प्रारम्भ किया। वेदज्ञ ध्वनि प्रारम्भ होने लगी परन्तु वे वेदम् ब्रह्मा अम्रतीम बृहे, वह अमृत को पान कराने वाला एक नृत कहलाता है।

ऋषि-मुनियों की शङ्का का निवारण

मेरे पुत्रों! देखो वेदारम्भः इनका मानो देखो यजोपवीत संस्कार होने के पश्चात् अब नाना ऋषि-मुनियों में एक शङ्का उत्पन्न हुई क्या ये जो वशिष्ठ मुनि ने याग कराया है मानो इसका तात्पर्य क्या है। तो नाना विचारवेत्ता अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गए और विद्यमान हो करके उन्होंने अपना-अपना दृष्टिकोण मानो अपनी-अपनी वार्त्ता को उद्गीत रूप में गाना प्रारम्भ किया। मेरे पुत्रों! देखो जब याग का प्रारम्भ हुआ याग के सम्पन्नता को प्राप्त हुए तो उस समय देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज उपस्थित हुए और उपस्थित हो करके उन्होंने कहा मेरा सौभाग्य है, मैं यह चाहता हूँ कि महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज इस याग में विद्यमान हैं ये अपने विचारों से कोई वाक्य प्रगट किया जाए। मेरे प्यारे! देखो वह अप्रतम् ब्रह्मा राजा और राजलक्ष्मियाँ भी वहीं विद्यमान हैं। परन्तु उद्घोष हो रहा है कोई वाक्य उच्चारण करे क्योंकि वह बुद्धिमानों की, बुद्धिजीवी प्राणियों की सभा थी। परन्तु वाक्य इसलिए नहीं उच्चारण हो रहा है क्या वह अपनी कटुता का ब्रहे वासम् बहे लोकाम्। मेरे पुत्रों! देखो इस आभा को पाने के पश्चात् मानव के हृदय में एक ज्योति-सी जागरूक हो जाती है। जब कोई याग का क्रियाकलाप करता है। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षियों ने आज्ञा ब्रहे और

ऋषियों ने आज्ञा दी कि अपना-अपना मन्तव्य प्रगट करो। परन्तु नामो उच्चारण होने लगा।

महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज द्वारा उपनयन की विवेचना

सबसे प्रथम मानो देखो वेदाम् अमृताम् देवम् ब्रह्मलोकाः ब्रह्ममण्डम् ब्रहे वाचक प्रव्हा लोकाम् समिधम् ब्रह्मा अरुणम् ब्रही व्रतम् वाचन्नमम् ब्रहे कृताम् लोकाः। मेरे प्यारे! देखो इस आभा को ले करके महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज उपस्थित हुए और महर्षि वैशम्पायन ने उस विद्यालय में वशिष्ठ मुनि महाराज, माता अरुन्धती और राजा दशरथ तीनों मानो राजलक्ष्मियाँ सब उसमें विद्यमान हैं, ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं। उन्होंने कहा कि आज मैं उपनयन संस्कार में, मैं सम्मिलित हुआ हूँ। परन्तु उपनयन का अभिप्राय क्या है? वह तो मैं मानो जो देखो धारण किया जाता है उसे उपनयन कहते हैं, जो जिसके गर्भ में तीन प्रकार की प्रतिभा निहित रहती हैं। वह तीन प्रतिभा कौन-सी हैं मानो तीन ऋण—जब भी मनुष्य इस संसार में आया है तो तीन प्रकार के ऋणों को ले करके आया है और वह सबसे प्रथम जो ऋण है, ये मानो देखो ऋण है ब्रही सम्भवा वही लोकाम्। देवताओं का ऋण है और द्वितीय जो ऋण है वह मानो देखो आचार्य ऋण है और ऋषि-ऋण आचार्यजनों में परणित हो जाता है और मातृ ऋण कहलाता है। मेरे प्यारे! ये भिन्न-भिन्न प्रकार के ऋण हैं। जब भी मानव संसार में आया है वह तीन प्रकार के ऋणों को ले करके आया है। हमारे यहाँ देवताओं का ऋण, देवता किसे कहते हैं? **देवता उसे कहते हैं जो हमें देता है, जो हमें प्रदान करता है उसी का नाम देवता है।** देवता की मीमाँसा करते हुए महर्षि वैशम्पायन ने कहा कि मेरे विचार में तो बड़ी विस्तृत व्याख्या है इसकी। देवता हमारे शरीरों में क्रियाकलाप कर रहे हैं मानो जल, अग्नि, तेज, वायु के रूप में स्पर्श और गन्ध इत्यादि के रूप में वे देवता विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! देखो नेत्रों का देवता सूर्य कहलाता

है, रसना का देवता चन्द्रमा है, मुखारबिन्द का देवता वायु है। मेरे प्यारे! गुरुत्व देखो ब्राही व्रणा मनों का देवता गुरुत्व पृथ्वी कहलाती है, अमृत को प्रदान करने वाला आपोमयी ज्योति कहलाती है और जो मानो देखो संस्कार अपने अन्तःकरण में विद्यमान हैं परन्तु उनका हमें कोई प्रतीत नहीं है, मेरे पुत्रों! देखो वह देवत्व कहलाता है। वह देवता तीन प्रकार के ऋणों को ले करके सबसे प्रथम देखो यहाँ ऋणम् ब्रह्मे देव ऋण कहलाता है। पितर ऋण किसे कहते हैं जो माता-पिता अपने में ब्रह्मचारी को सुयोग्य बनाते हैं, जो उसका निर्माण करते हैं। तो वह माता-पिताओं के ऋणी होने वाला मानो देखो वह बाल्य कहता है हे माता! तुमने मुझे ऋणी बनाया है और मेरा भी कोई ऋण रह गया है। उन्होंने कहा तुम्हारा कोई ऋण नहीं रहा। परन्तु उद्गीत पे गाया जाए कि ऋणम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! ये देवताओं का ऋण कहलाता है। देवताजन् कौन हैं जो अपने शरीरों में वास कर रहे हैं। हमें देवत्व कहाँ तक ले जाता है बेटा! जब देवता के सम्बन्ध में विवेचना मानव प्रारम्भ करता है तो देवता उसे कहते हैं जो देता है। **सबसे प्रथम बेटा! परमपिता परमात्मा देवता है, परमपिता परमात्मा देता है।** अपने ही सन्निधान मात्र से ये प्रकृति का क्रियाकलाप हो रहा है, मानो ये उसी से क्रियाकलाप प्राप्त हो रहा है जिन क्रियाकलापों को ले करके हम वास्तव में अग्रगणीय बनना चाहते हैं। तो वह हमारे समीप एक ऋण के रूप में विद्यमान रहता है। मैं ऋण से अवऋण होने के लिए मानो देखो पितर जो ऋण है **माता ने जिस आभा से हमें धारण किया और अपने में बसा रही है, तो हमें भी अपने में उसे बसाना चाहिए।** मेरे प्यारे! देखो माता अनुपम है, माता देवत्व है। मेरे प्यारे! देखो कोई भी मानव समाज अपने में यदि ऊँचा बनना चाहता है तो मानव समाज का ये क्रियाकलाप रह जाता है क्या ये अपने में अनूठे-अनूठे क्रियाकलापों को क्रियाकलापों में तत्पर हो करके अपने में महान् बन जाते हैं।

मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ परिचय देने के लिए चला आया हूँ और वह परिचय क्या? महर्षि वैशम्पायन ने उपनयन के पश्चात् उपनयन संस्कारों में मानो देखो पितर ऋण और देव ऋण को विशेष कहा है। परन्तु वही पितर हैं, वही देवत्व हैं, वही मातृ है, वह प्रकृतिवाद है। मानो सब अपने-अपने रूपों में रत्त हो रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो द्वितीय जो ऋण है वह ब्रह्म ऋण कहलाता है। मानो देखो जिसे हम देव ऋण और अप्रतम् ब्रह्मा ब्रहे सम्भवा लोकाम्। देव ऋण और पितृ ऋणों की आभा रत्त रही है वहाँ पितृ ऋणों में, पितर ऋणों में पितरों को भविताम् देवत्म् भविता देही। मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा ये ऋण हैं और तीसरा जो ऋण है वह मानो देखो ऋषि-ऋण कहलाता है। **ऋषि-ऋण वह कहलाता है जो ऋषिजन अपने चरणों में विद्यमान कराते हुए ब्रह्मचारी को महान् बनाते हैं।** वे पितर मानो देवता क्या आचार्य ऋण हमारे समीप इसको ऋषि-ऋण भी कहते हैं। **ऋषियों का ऋण क्या है?** ऋषि-मुनियों ने तपस्याएँ की हैं और तपस्या करने के पश्चात् जो उन्होंने अपने जीवन में कुछ दिया उसको स्वीकार करना है अथवा उसके अनुसार अपने में क्रियाकलापों को करना, क्रियाकलापों में रत्त रहना है। तो ये तीन प्रकार के ऋण हैं जिन ऋणों में देखो ऋषि-ऋण विशेष कहा जाता है। ऋषि-ऋण का अभिप्राय ये है जैसे दर्शनों में विज्ञान आता है, कर्मकाण्ड आता है और ज्ञानकाण्ड आता है उस सबको धारण करना है, सबमें अपनी-अपनी प्रतिभा का दर्शन करना है। तो मानव देखो वह ऋणों से अवऋण हो जाता है। मानव जब अपने में तीन प्रकार के ऋणों से अवऋण हो करके मानो वह अन्वेत्तियों में परणित हो जाता है तो वह अनुसन्धान वृतः मानो देखो ऋषि-ऋण को ग्रहण करना है। मेरे प्यारे! देखो तीन ऋणों की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा सबसे प्रथम देव ऋण है, उसके पश्चात् पितर ऋण है, उसके पश्चात् मानो देखो ऋषि-ऋण कहलाता है। इसलिए उपनयन में तीन धागों मानो तीन सूत्रों से सूत्रित किया है। वे

तीन सूत्रों से सूत्रित करके जैसे रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण है इनको साम्य रूप दे करके इनके ऊपर एक सुमेरु कहलाता है, वह परमपिता परमात्मा के शब्द गुथे हुए हैं। वह जो परमपिता परमात्मा से गुथा हुआ सा जगत् दृष्टिपात आता है वही तो ऋणों से अवऋणों को जानने की प्रतिभा हमारे समीप आती है। मेरे प्यारे! देखो वैशम्पायन इस वाक्य को उच्चारण करके मौन हो गए।

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के उद्‌गार

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज को सम्बोधित किया क्या आचार्य ब्रह्मवेत्ता अपने ब्रह्मवाचना ब्रह्म रूपों में रत्त करते हुए मानो अपनी विवेचना प्रगट करें। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज सभा में उपस्थित हो गए। राष्ट्र और ऋषि-मुनियों का एक समाज मेरे पुत्रों! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले ये ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं। मेरी इच्छा ऐसी है कि इनका परिचय कराया जाए मानो ये चारों राजकुमार पुत्र और उन्होंने कुछ ऋषि पुत्रों का भी वर्णन किया और कुछ मानो उनका वर्णन किया जो देवत् कोटि के प्राणी होते हैं और उनकी सन्तानें होती हैं। वह राजा और राजकुमार ऋषि वल्द ऋषि फर्द जितने भी वृत्ति हैं। मानो देखो जितने भी वृत्ति और भी सूक्ष्म वृत्ति में हैं। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा कि मेरी इच्छा ये है क्या विद्यालय तो ऊँचे परम्परा से विद्या अपने में बड़ी महान् रही है। परन्तु एक पंक्ति में विद्यमान हो करके मेरे आश्रम में भोजन करते हैं अथवा भोज्य करते हैं। और जिस राजा के राष्ट्र में या जिन विद्यालयों में मानो देखो राजकुमार और सेवक का पुत्र एक ही पंक्ति में भोजन पान करता है आचार्य की संरक्षणता में तो मानो देखो उस राजा का राष्ट्र कितना पवित्र होता है। मेरे प्यारे! उसमें विद्यालय कितना पवित्र कहलाता है। जहाँ मेरे पुत्रों! देखो राजा अपने राष्ट्र में देखो नाना छात्रावास अब्रही मानो देखो छात्र प्रवृत्तियों में रत्त हो करके उन्हें कुछ ना कुछ प्रदान करना है, उन्हें मानो देखो भव्य

ज्ञान देना है। तो मुनिवरों! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले मेरे से पूर्व ऋषि ने, तपस्वी ने अपना मन्तव्य प्रगट किया। उन्होंने मानो देखो ये वर्णन कराया क्या मानव का जीवन एक यज्ञोमय में रहना चाहिए, पवित्रतम् बन जाए। मानो ये वाक्य बड़ा प्रिय लगा।

ऋणों का स्वरूप

वशिष्ठ मुनि बोले क्या हमारे यहाँ तीन प्रकार के ऋणों की विवेचना की है। सबसे प्रथम देवताओं का ऋण है द्वितीय मानो देखो मातृ-पितृ ऋण है और तृतीय जो ऋण है वह ऋषि-ऋण है। ये तीन प्रकार के ऋणों की चर्चाएँ ऋषियों ने की हैं। आज मैं उन्हीं की चर्चा करता चला जाऊँ क्या तीन प्रकार के ऋण कौन-से होते हैं? सबसे प्रथम देव ऋण, देव किसे कहते हैं जो देता है, जो देता ही रहता है उसे देवता कहते हैं। परमपिता परमात्मा को देवता, और ये जो पञ्चीकरण दृष्टिपात आ रहा है ये भी देवताजन् हैं। और ये देवताजन् मानो देखो देवत्व प्रदान कर रहे हैं मानो देखो देवताओं को अपने में प्रदान करते हुए वे देवता कहलाते हैं। मानो देखो विचार आता है कि पितर कौन कहलाते हैं, माता कौन कहलाती है? जो माता अपने ही संसार में, गृह में प्रवेश हो करके अपने उद्देश्यों को जानती है। अपने उद्देश्यों को माता पितर दोनों जानते हैं क्या हमें मानो गृह में प्रवेश तो इसलिए होना है कि सन्तान को जन्म देना है। योग चरित्रता में जहाँ अहम् ब्रही। मानो उनका जो गहना है, उनका जो आभूषण है वह स्वस्थ चरित्र होना चाहिए और मानवता होनी चाहिए। मानो देखो इस प्रकार जब वह आचार्य ब्रह्मचारीजनों तुम्हें माता की सेवा करनी है। सेवा का अर्थ क्या है? सेवा का अभिप्राय यह है क्या ये जो मानो देखो सेवा उसे कहते हैं जो वृच्चतम् ब्रह्मे वाचा सम्भवा ब्रहे देवता। वेद का मन्त्र कहता है क्या वह माता सुयोग्य है जो माता अपने पुत्रों को महान् बना दे, पिता वह सुयोग्य है जो पुत्रों को महान् बना दे और वही पुत्र मानो उनका

नामोकरण को ऊँचा ऊर्ध्वा में पहुँचा दे। वास्तव में तो विचारा जाए तो ये जो शरीर में आत्मा है ये आत्मा किसी का पुत्र है ना पुत्री है। यह आत्मा तो एक रस रहने वाली चेतना है। परन्तु देखो वह जिस परमपिता परमात्मा चित्त के मण्डल में प्रवेश हो करके मानो अपना-अपना वक्तव्य देते रहे हैं, अपनी-अपनी विवेचनाएँ करते रहे हैं। इन विवेचनाओं के सन्दर्भ में तो जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु देखो तीन ऋणों को ले करके आता है मानव। बेटा! वह तीन ऋण हैं–सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण कहलाता है। इन तीनों ऋणों से, इन तीनों गुणों से पार होने का नाम ही मानो देखो ऋषि-ऋणों से ऊर्ध्वा को प्राप्त करना, अवऋण होना है। मेरे प्यारे! देखो इसको जान करके, इनका साकार रूप बना करके और इन्हें समाप्त कर देना चाहिए। तो मानो देखो वह हमारे यहाँ एक ऋण कहलाता है उस ऋण से अवऋण होने के लिए प्रभु का चिन्तन उसके ज्ञान और विज्ञान में रत्त रह करके हम अपने को ऊँचा बनाएँ।

देवताओं से अवऋण होने की विधि

इस प्रकार जब ऋषि ने विवेचना दी मेरी इच्छा ये है क्या मेरे विद्यालय में मानो देखो ऋषि-ऋणों का, ऋषियों का कर्त्तव्य है कि याग करना, याग में मानो देखो सात्विकता को लाना और देखो यागाम् ब्रह्मे लोकाम् अध्ययन करना, जितना भी देखो ऋषि-मुनियों का दिया हुआ ज्ञान और विवेक है अथवा विवेचना है। जैसे हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में एक **वशिष्ठ शाखा** कहलाती है। वशिष्ठ शाखा में उन्होंने वशिष्ठ मुनि महाराज ने वेद मन्त्रों के कुछ मन्त्रों को उद्गीत रूप में लाते हुए उन्होंने एक वशिष्ठ शाखा का निर्माण किया था। और वह मानो देखो ब्रह्म से सम्बन्धित थी। वह ऋणों से अवऋण होने के लिए मानो जिसमें एक क्रियाकलाप था, एक आभा थी। तो मुनिवरों! देखो वह वशिष्ठ शाखा कहलाती है जो वेद मन्त्रों में से कुछ मन्त्र ले करके उन्हें चुनौती प्रदान

करते हुए उन्हें यागों के लिए ब्रह्मचारियों को आज्ञा दी गई। मेरे प्यारे! देखो मुझे ऐसा स्मरण है वशिष्ठ मुनि महाराज ने एक यज्ञ करने की पद्धति में ब्रह्मचारियों को मानो देखो कुछ साकल्य की चुनौती दी। एक वेद मन्त्र आता है, वेद मन्त्र कहता है सम्भवम् ब्रहे काशम ब्रहे वृतम् गौ घृतम् दीवङ्गा गौ रसम् ब्रही रसम् देवाः वाचन्नयमाः। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों तुम्हें देवताओं से अवऋण होना है तो प्रातःकाल तुम्हें याग करना होगा। अपनी सङ्गठित अपनी विचारधारा बना करके और तुम्हारे मानो देखो साकल्य आहुति देने वाला। मानो देखो उसमें लगभग स्वेती एक वृक्ष होता है और स्वेती वृक्ष की मानो देखो उसकी समिधा होनी चाहिए और उसकी समिधा हो करके तन्दुल में और तन्दुल और तन्दुलों में केशिका और केशिका की आभा में मानो देखो कन्चकेतु एक औषध कहलाती है। कन्चकेतु औषध को ले करके इनका मानो देखो घृत में, गौ घृत में इनका विकार घृत बनाया जाता है। और घृत बना करके देखो उन्होंने तन्दुल मस्तकेतु और मुनिवरों! देखो नाग नागकृतिला मुनिवरों! देखो ये सब औषधियों को एकत्रित करके मुनिवरों! देखो उन तन्दुलों को अपने में वृत्त करते हुए और देखो माता के सम्बन्ध में जितने मन्त्र आते हैं उन सबको, वेद मन्त्रों को एकत्रित किया ऋषि ने और ये कहा कि ये उच्चारण करो जिससे तुम्हारा जो ये विद्यालय है इसमें किसी प्रकार का न तो कलह होगा, न इसमें मानो दूष्य चरित्रता आएगी और इसका वायुमण्डल मानो देखो पवित्र करके प्रदूषणता को नष्ट करके देखो एक प्रदूषणता को नष्ट करने वाले परमाणु का जन्म होगा। हमारे यहाँ राम के काल में, त्रेता के काल में भी प्रायः देखो इसी साकल्य से आहुति दी गई हैं। परमाणु विद्या को भी जाना गया है परन्तु परमाणु विद्या को जानते हुए भी इन समिधाओं के द्वारा देखो याग होता रहा जिससे दूषित वायुमण्डल न रहा। राजा के राष्ट्र में भी राजा को भी यह कहा गया कि वैज्ञानिकों के विज्ञानशाला में भी इस प्रकार की आहुति रहीं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है राजा रावण के विधाता

कुम्भकरण देखो वह अपने में हिमालय में इस प्रकार के याग करते रहे हैं। और वह याग मानो दूषित वायुमण्डल समाप्त हो जाना परमाणुवाद में देखो शुद्धिकरण हो जाना, ये मानो देखो देवताओं का ऋण है। देवताओं के ऋणों से अवऋण होना है।

अन्तरात्मा को ऊर्ध्वा में ले जाने वाला याग

देखो, इस प्रकार वशिष्ठ मुनि महाराज ने माता के सम्बन्ध में जितने भी मन्त्र थे वे वेदों से चुनौती की और देखो उन्होंने उन्हीं वेद मन्त्रों को ले करके ब्रह्मचारियों को याग की पद्धति में निहित कराया। मानो देखो उनसे दूषित वायुमण्डल अपने अन्तरात्मा को ऊँचा बनाना हो तो मानो देखो उसमें और भी साकल्य प्रदान किया जाता है। उसमें मानो देखो मृचिका सम्भेतु औषध होती हैं मानो सर्पकेतु कादनी एक औषध होती है जो मानो देखो पिपाद बना करके गौ दुग्ध में, गौ रसों में गर्म करके मानो उसको प्रदान किया जाता है। तो मुनिवरों! देखो अक्षमा (क्षय) रोगों तक वह अक्षमा (क्षय) के रुग्ण वाले हैं उनका हृदय भी स्वस्थ बन जाता है। तो विचार, मैं विशेष चर्चा में नहीं जाऊँगा। ये तो मैं आज विशाल वन में चला गया हूँ। परन्तु विचार केवल ये है क्या ऋषि ने कहा कि ये औषधियों का एक निर्माण करते हुए उन्होंने जितने भी माता सम्बन्धी वेद मन्त्र हैं जैसे स्तुता मया जैसे ममकी मामत्वा देवत्वम्। मानो देखो इन सब मन्त्रों को एकत्रित करके उन्होंने ब्रह्मचारियों को आज्ञा दी क्या देखो इस प्रकार के याग होने चाहिएँ और इन यागों में ये विशेषता है क्या वायुमण्डल पवित्र हो जाता है। मुनिवरों! देखो जिस समय महर्षि विश्वामित्र जब इन विचारों से आया कि मैं आज इसके पुत्रों को नष्ट करूँगा तो वह नष्ट तो बहुत कुछ करता परन्तु एक ही क्रूर बन गया। एक ही पुत्र का विनाश हुआ, एक ब्रह्मचारी का परन्तु देखो उसके पश्चात् इस वायुमण्डल में मुनिवरों! विश्वामित्र की बुद्धि का भी रूपान्तर हो गया।

देवताओं का ऋण

विचार मैं विशेष देना नहीं चाहूँगा। विचार केवल ये कि महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये वर्णन करते हुए कहा, ये वाक्य कहा ऋषि-मुनियों से और ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! ये उपनयन संस्कार है, उपनयन में सबसे प्रथम देवताओं का ऋण आता है क्योंकि देवता हमारे शरीर में वास कर रहे हैं। हम मानो न तो अग्नि के ही बिना संसार में रह सकते हैं, न मानो आपो जल के बिना ही रह सकते हैं, न वायु के बिना रह सकते हैं, न पार्थिवता के बिना भी नहीं रह सकते और जब यह अन्तरिक्ष न होगा तो उसके बिना भी नहीं रह सकते। तो विचार क्या मानो देखो ये देवत्व कहलाते हैं इनका शुद्धिकरण होना, इसके लिए हमारा क्रियाकलाप होना ये बहुत अनिवार्य है। हमारे यहाँ राजा देखो बुद्धिमानों को विश्वविद्यालयों में आचार्य नियुक्त करते थे। मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण है महाराजा जब ये मानो अयोध्या में ऋषि विद्यालय का निर्माण हुआ था तो उस समय सब ऋषि-मुनियों को एकत्रित किया और राजा ने नाना ब्रह्मवेत्ताओं से ये कहा कि निर्वाचन होना है परन्तु कैसे गुणों वाला आचार्य होना चाहिए? तो उन्होंने वर्णन ब्रहे वर्णन शैली सबसे प्रथम ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। जो ब्रह्म की व्याख्या करने वाला हो, मानो द्वितीय शैली उन्होंने वर्णन किया क्या जो पृथ्वी विज्ञान को जानने वाला हो, तृतीय उन्होंने वर्णन किया जो मानो अग्नि पदार्थ विद्या को जानने वाला हो, चतुर्थ उन्होंने कहा जो विज्ञान में उड़ान उड़ता हुआ उसे समेट करके अपने हृदय में दृष्टिपात करने वाला हो, ऐसा आचार्य होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इतने गुणों वाला, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज को मानो देखो आचार्य नियुक्त किया जो मानो ब्रह्मे वाचः प्रवहाः। मेरे प्यारे! देखो विचार हमारे यहाँ ये आता रहता है क्या ब्रह्मवेत्ता भी हो, ब्रह्मनिष्ठ भी हो और देखो समाज में राष्ट्रवेत्ता, राष्ट्र का निर्माण भी जानने वाला हो। मेरे प्यारे! देखो ऐसा अध्ययनशील, ऐसा तपस्वी महापुरुष ही राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है।

मेरे प्यारे! देखो विद्यालयों में जिस प्रकार भी ब्रह्मचारियों का निर्माण होता है तो वह निर्माण अपनी स्थलियों में पवित्र कहलाता है।

माता का ऋण

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा क्या मेरे विचार में तो ये ही आता है कि हे ब्रह्मचारियों! तुम सबसे प्रथम देव ऋण से अवऋण होना है और द्वितीय जो ऋण है वह माता का ऋण कहलाता है। माता का ऋण तो ऋषि ने, वैशम्पायन ने व्याख्या की है परन्तु मैं भी अपनी व्याख्या करता चला जाऊँ क्या माता का ऋण क्या है, मातृ ऋण जिसे कहते हैं पितर ऋण भी उसे ही कहते हैं, जिसे पितर ऋण कहते हैं। मानो पितर कहते हैं जो देता है। पितर किसे कहते हैं जो देता रहता है। पितर उसी को कहते हैं जो अपनी सन्तान से प्रीति करता है। देने का अभिप्राय ये नहीं है क्या हम सन्तान को मानो प्रीति करते रहें और वह कुशासनवादी बन जाए। देखो, वह प्रीति नहीं होती वह शत्रुता कहलाती है। मेरे प्यारे! वह शत्रुता कहलाती है कि जो बालक को माता अपने गर्भस्थल में निर्माणित कर रही है, पिता के चरणों में आते ही पिता उसे चरणों में वन्दना और नमः का पठन-पाठन करा रहा है और पिता अपने पितर हैं और देखो ऐसे पितरों का जो ऋणी है। वह ब्रह्मचारी है, ब्रह्मचरिष्यामि जो देवता बनने के लिए तत्पर है। ब्रह्मचारी देखो योगाभ्यास करता है, मन को स्थिर करता है, प्राण को मन में सङ्गठित करा देता है। मानो देखो अपनी प्रवृत्तियों को सबको प्रभु के आश्रित करता हुआ वही ब्रह्मचारी बेटा! देखो माता-पिता के ऋणों से अवऋण हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो वह संस्कार होने के पश्चात् भी देवी का गृह में गमन होते ही मानो देखो देवी भी उसी प्रकार ब्रह्मवर्चोसी का पालन करते हुए ही अपने में संसार का उपार्जन एक आभा में नियुक्त करके मानो देखो इस समाज को ऊँचा बनाना, समाज की रचना करना भी ये माता-पिता और ब्रह्मचारियों का उद्देश्य कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो

महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा वह पितर हैं और उन पितरों और माताओं की सेवा करना। सेवा का अभिप्राय? ऋषि ने तो बड़ी ऊर्ध्वा उड़ाने उड़ी हैं परन्तु मैं तो ऋषि देखो यही ब्रह्मचारियों को कहता हूँ क्या मानो देखो माताओं पितरों की सेवा का अभिप्राय ये है। सेवा का अभिप्राय ये नहीं है क्या शरीरावृत्त किया जाए। **देखो सेवा का अभिप्राय है उनकी आज्ञा का पालन करना है।** आज्ञा के पालन करने का अभिप्राय ये क्या कुवाक्यों का पालन करना नहीं है, जो यथार्थ हैं दर्शन से गुथे हुए शब्द हैं मानो देखो जो उसके अनुकूल पितरों की सेवा करता है। सेवा का अभिप्राय उसका नामोकरण ऊँचा हो जिससे उनका आयु दीर्घ हो जाए। यदि माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला पुत्र, पुत्री नहीं हैं तो माता-पिता की आयु सूक्ष्म बन जाती है। यदि मानो देखो माता-पिता बाल्य को आज्ञा, बालक को ऊर्ध्वा में नहीं शिक्षा देते और आचार्य नहीं दे पाते तो मुनिवरों! देखो वह ब्रह्मे व्रताम्। वह माता-पिता मानो बालक की आयु को सूक्ष्म बना रहे हैं।

विचार-विनिमय बेटा! मैं विशेष आभा में, तुम्हें मैं ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह प्रगट करने के लिए आया हूँ क्या महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपने उपदेशों में, अपने विचारों में यह कहा है क्या ये जो उपनयन संस्कार है, ये जो सूत्र है ये मानव को आयु में परिपक्व बनाता है, आयु में निहित कर देता है। तो इसलिए देखो विचार आता है कि जब देखो प्रणालियों में पवित्रता आती है दोनों प्रतिभा से तो मानो देखो यहाँ सेवा का अभिप्राय मैंने वर्णन किया है। सेवा का अभिप्राय ये है कि माता-पिता के नामोकरण को ऊँचा बनाना है, ऊर्ध्वा में ले जाना है तो मानो वह उनकी आज्ञा का पालन करना है। उन्हें भोज्य की चिन्तन है, भोज्य की चिन्ता तो प्रभु को होती है। **कर्त्तव्य की चिन्ता मानव को होनी चाहिए, कर्त्तव्यवादी बनना चाहिए।** परमपिता परमात्मा ने उसे सर्वत्र सामग्री प्रदान की है।

ऋषि-ऋण

वशिष्ठ मुनि ने कहा तृतीय राष्ट्रों में तृतीय जो ऋण है वह ऋषि का ऋण है। ऋषि के ऋणों का अभिप्राय ये है क्या प्रत्येक ब्रह्मचारी को और प्रत्येक मानव को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। ब्रह्म का निश्चित हो जाना चाहिए, आत्मान् ब्रहे। मानो देखो ये विचार लें कि प्रभु है। सबसे प्रथम ऋषि जो हैं ये निर्णय कराते हैं कि ईश्वर है। मानो देखो जब भय का एक उपकार होता है, उपहार दिया जाता है। आचार्य सबसे प्रथम यही कहता है चक्षु में शुन्धामि, प्राणम् में शुन्धामि, श्रोत्रम् में शुन्धामि सर्वत्र इन्द्रियों को प्रदान कर मुझे जिससे यह निश्चित हो जाए कि ईश्वर है, परमात्मा है। जब परमात्मा का विधान होता है तो ब्रह्मचारी का ब्रह्मवेत्ता बनना बहुत अनिवार्य हो जाता है। वह ऋषि-ऋणों से अवऋण हो जाता है। ऋषि-ऋणों से पूर्ण हो जाता है। तो मानो देखो ऋषियों के ऋणों का अभिप्राय क्या मानव का यह विचारना कि आत्मा का लोक क्या है। आत्मा का लोक शरीर है और मुनिवरों! देखो कि यह जो शरीर है यह देवताओं की प्रतिभा अथवा धरोहर है और इसी में ब्रह्म निहित रहता है। उस ब्रह्म को जानना ही तो मेरे प्यारे! यह ऋषि-ऋण कहलाता है। क्योंकि **ऋषियों ने प्रभु को जाना है। सबसे प्रथम ऋषि-मुनियों की यह देन रही है–उन्होंने ये कहा है क्या ईश्वर है, परमात्मा है।** परन्तु जब परमात्मा है का पठन-पाठन उन्हें हो जाता है ऋषि-ऋणों में मानो देखो उसके पश्चात् शरीर को जानना है, आत्मा को जानना है। ऋषि-मुनियों के जो उपदेश हैं मानो देखो प्राणायाम करना, साधना करना ये उसमें रत्त होना है। तो मुनिवरों! देखो ये हमें ब्रह्मवाद में ले जाता है। ये हम ऋषि-ऋणों से अवऋण हो जाते हैं।

ये हमें मानो देखो तीन सूत्रों का, तीन सूत्रों का एक मानो उपनयन कहलाता है और ये तीन में सर्वत्र जगत है बेटा! देखो आगे ब्रह्मग्रन्थि है, उस ब्रह्मग्रन्थि को ये क्या जितना भी ये जगत है सब उस

ब्रह्म से पिरोया हुआ है। ब्रह्म से कटिबद्ध हो रहा है। इसलिए मुनिवरों! देखो हम तीनों ऋणों से अवऋण होने के लिए तत्पर हो जाएँ। मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये तीन प्रकार के मुद्दे ले करके बेटा! मौन हो गए और उन्होंने कहा कि मेरी इच्छा ये है क्या हमारे विद्यालय में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा में रत्त रहना और ये ब्रह्मचारीजनों का उपनयन हुआ है। मेरे यहाँ आज का जो उपनयन संस्कार हुआ है उस उपनयन में लगभग में मानो देखो उनके विद्यालय में उस समय बाईस हजार विद्यालय में विद्यार्थी अध्ययन करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो जिसमें बड़े महापुरुष अमब्रहे! और एक पंक्ति में भोजन करना, एक-सा ही उपदेश देना और मुनिवरों! देखो उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की देखो बुद्धियों की परख होना भी। जो विद्यालय में देखो धर्नुविद्या में पारायण हैं उनके कक्ष भिन्न हैं, जो कर्मकाण्ड में भिन्न हैं उनके मानो कक्ष भिन्न हैं। मेरे प्यारे! जो पृथ्वी विज्ञान में मानो देखो ऊर्ध्वा में हैं उनके कक्ष भिन्न हैं, जो वनस्पति विज्ञान में ऊर्ध्वा में गति कर रहे हैं उनके कक्ष भिन्न हैं। मेरे प्यारे! देखो जो ब्रह्मवेत्ता बन रहा है, ब्रह्मवेत्ता की दीक्षा लेना चाहता है वह ब्रह्मवेत्ता की मानो देखो पोथी में ब्रह्म का उपदेश दिया जा रहा है। तो विचार-विनिमय क्या जो परमाणु विद्या, सूर्य विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान और देखो जितना चन्द्र विज्ञान है उसके कक्ष भिन्न-भिन्न निर्माणित हैं उनमें ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते हैं। तो ये है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या है कि उस परमपिता की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम अपने विद्यालयों को सजातीय बनाए। विद्यालयों में एक ही रूप होना चाहिए परन्तु यदि हम राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए तत्पर रहते हैं, **राष्ट्र को महान् बनाना है तो मानो आचार्य पवित्र हों** क्योंकि आचार्यों से ही राष्ट्रवेत्ता! का निर्माण होता है, राष्ट्रीयता की प्रतिभा का

स्त्रोत होता है। **ज्ञान और विज्ञान, चरित्र का निर्माण विद्यालय में हुआ करता है।** चरित्र किसे कहते हैं मेरे प्यारे! जो **मानव को अपने को जो बात मानो कटु प्रतीत होती है उसको द्वितीय के लिए प्रतिपादन न करें उसी का नाम चरित्र कहलाता है।** मेरे प्यारे! एक ही शब्द में सर्वत्र परिचय आ जाता है। मैं ये चर्चाएँ तो किसी काल में प्रगट करूँगा। आज का वाक्य तो अब ये समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हमारे यहाँ उपनयन संस्कार के पश्चात् मानो देखो वेदारम्भ शिक्षा का प्रारम्भ होता है। ये चर्चाएँ किसी काल में प्रगट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् मम्भविताः आभ्याम् रथम् मनु आपा रेवम् भद्राः वाचन्नमाः।
ओ३म् समिधा अग्नम् वाचन्नमाः।

दिनाँक :
समय : } अनुपलब्ध
स्थान :

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि का अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

।। ओ३म् ।।

याग व भूः, भुवः, स्वः

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं, जितना भी यह संसार रूपी याग हो रहा है, यह उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा अथवा यह उसी का क्रियाकलाप है। आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में नाना प्रकार के यागों का वर्णन आ रहा था, यागों की चर्चा आ रही थी, और विचार यह आ रहा था कि प्रत्येक मानव इस संसार का याज्ञिक बना रहे, क्योंकि **याग तो मानव का आत्मीय कर्त्तव्य कहलाता है,** यह आत्मा की आभा में निहित रहने वाला है।

परमानन्द

आज का हमारा वेद मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है। वेदमयी वाणी प्रायः हमें आभा में प्राप्त होती रहती है, तो हम सदैव उसी में रत्त रहते है। आज का हमारा वेद मन्त्र यागमयी चर्चा कर रहा है अथवा याग के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार के मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है, जिससे मानव का हृदय अन्तर्मुखी बन करके अपने में मानवीय दर्शनों का चिन्तन कर सके। क्योंकि **चिन्तन करना बहुत अनिवार्य है।** इससे पूर्व शब्दों में जब हम उच्चारण कर-रहे थे

कि मनुष्यत्व प्राणत्व हो। ''चिन्तनदेहीं वृत्तनं देवः'' मन और प्राण के दोनों के सन्निधान से, दोनों के समन्वय से एक चिन्तन का अद्भुत दर्शन होता है तो मानव का चिन्तन ही रहना चाहिए, क्योंकि मानव जब संसार में आता है तो उसका एक उद्देश्य बना रहता है इस संसार में आने का; केवल एक ही उद्देश्य है कि वह आनन्द के लिए पिपासी रहता है और आनन्द के लिए वह सर्वत्र क्रियाकलापों में परणित होता रहता है। कहीं वह पुत्र में, पुत्रियों में संसार का जितना भी प्रपञ्च है वह सबमें एक आनन्द की विभूति सी प्राप्त करता रहता है परन्तु उसे आनन्द प्राप्त नहीं होता। आनन्द जब प्राप्त होता है जबकि संसार को जान करके और संसार की प्रतिभा, इस संसार की मानवीय आकृतियों में उनको एकत्र करता हुआ, अपने में समावेश करता हुआ, अन्त में मौन हो जाता है और अन्तर्मुखी हो करके अपनी अन्तरात्मा में परमात्मा का जो दर्शन करता है वह उसका परमानन्द कहलाता है।

आज आनन्द को प्राप्त करने के लिए हम परमपिता परमात्मा के यज्ञमयी स्वरूप का दर्शन करना चाहते हैं। प्रत्येक मानव उन दर्शनों में लगा रहता है, जिन दर्शनों में मानवीयता का ह्रास होता है, मानवीयता का दिग्दर्शन नहीं होता। तो दर्शन करने के लिए, हम परमपिता परमात्मा जो यजोस्वरूप है, हम प्रायः उसका दर्शन करना चाहते हैं। प्रत्येक आभा में निहित रहना चाहते हैं। आज का हमारा वेद मन्त्र परमपिता परमात्मा की उपासना और जहाँ महिमा का वर्णन आता रहता है, प्रत्येक वेद मन्त्र उसकी प्रतिभा में लगा हुआ है। उसी आभा में व उन्हीं वृत्तियों में ले जाते हुए हम परमपिता परमात्मा के उस ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में रत्त रहना चाहते हैं।

यागों की प्रतिभा का दार्शनिक रूप

यागों की प्रतिभा में एक दार्शनिक रूप तुम्हारे समीप हम ले जाना चाहते हैं। आज का वेद मन्त्र याग के सम्बन्ध में उद्गीत गा रहा है।

वास्तव में परमपिता परमात्मा ने जब भी संसार का सृजन किया अथवा ब्रह्माण्ड की रचना की है तो उसी रचना में संसार का यज्ञोमयी स्वरूप वर्णन किया है अथवा उसको रचाया है। जैसे यज्ञशाला में यजमान अपनी यज्ञवेदी का रचयिता है, वह यज्ञवेदी को रचता रहता है, परन्तु इसी प्रकार परमपिता परमात्मा की महानता एक आभा में निहित रहने वाली है उसी में हम अपने को रत्त कराना चाहते हैं। आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में यह आ रहा था कि सूर्य भी याजनिक (याज्ञिक) है। चन्द्रमा भी याग कर रहा है। इतने तारा मण्डल भी एक-दूसरे में ओत-प्रोत हो करके एक-दूसरे से इनका समन्वय होने से एक भव्य याग हो रहा है। परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी याग के ब्रह्मा निर्माणित किए गए हैं। उद्गाता वायु उद्गीत गाता रहता है। प्राण का संचार करता रहता है। यह वायु अग्नि तेजोमयी, तेजस्वी बन करके ऊर्ध्वा में जाकर यह अपने में याग कर रही है, ''आपोमहि हिरण्यं ज्योतीहि'' आपो एक ज्योति है, अनुपमता अपने में एक याज्ञिक बनी हुई है। नाना प्रकार के खाद्य, खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाली यह वसुन्धरा को पृथ्वी के नामों से वर्णन किया जाता है। इसे वसुन्धरा भी कहते हैं, प्रथा भी कहते हैं, धेनु भी कहा जाता है, भिन्न-भिन्न रूपों से इसका निरूपण किया है। और निरूपणवेत्ताओं ने अपना वर्णन किया है। ''सम्भवः ब्रवे व्रातं-देवं अग्ने यादहः'' एक-दूसरे में पिरोए हुए होने से, सहायक होने से याग हो रहा है। जैसे मेरी प्यारी माता अपने पुत्र को महान् बनाने के लिए अपनी गर्भ स्थिति में शिक्षा देना प्रारम्भ करती है, वह शिक्षा देती हुई मानो एक भव्य याग कर रही है।

प्राणों की रक्षा

याग के सम्बन्ध में वैदिक मन्त्रों के वेदाचार्यों ने बड़ी-बड़ी सुन्दर टिप्पणियाँ की हैं, अपना विचार दिया है। आज मैं तुम्हें उस अतीत के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ अर्धभाग इत्यादि मुनियों की चर्चा

आती रहती है। एक समय इन्द्र और बकासुर का सँग्राम हुआ और बकासुर इन्द्र के सँग्राम में बकासुर ने अतिवृष्टि के रूप में इस पृथ्वी को जलमग्न कर दिया। जब यह पृथ्वी जलमग्न हो गई तो बड़ा अकाल हो गया, जब बड़ा अकाल हो गया तो अनाज सब समाप्त हो गया। अन्न नहीं रहा तो प्राणी प्राणों की रक्षा कैसे करे। तो एक समय महर्षि अर्धभाग मुनि के आश्रम में उनकी पत्नी के अन्न के बिना प्राणान्त होने लगे। तो उसने कहा हे प्रभु! हे देवत्व ऋषि! मेरा प्राणान्त होने वाला है। मैं अन्न के बिना इस संसार से जा रही हूँ। महात्मा अर्धभाग ने वहीं से गमन किया। भ्रमण करते हुए एक हाथीवान जो उड़दों का पान कर रहा था, ऋषि ने जाकर कहा, भिक्षामयी देह.। उन्होंने वृति को उड़दों को प्रदान कर दिया। जब प्रदान कर दिया तो उन्होंने स्वीकार कर लिया। ऋषि ने जब उनको प्राप्त कर लिया तो हाथीवान ने कहा कि क्या ऋषिवर मैं आपके लिए जल लाऊँ? उस समय ऋषि ने कहा कि तुम शूद्र हो। जब शूद्र का वाक्य उच्चारण किया तो हाथीवान ने कहा, प्रभु! मेरे जूठे उड़दों में तो मैं शूद्र नहीं हूँ तो जल में कैसे शूद्र बन जाऊँगा? हाथीवान से ऋषि कहते हैं कि जिनसे प्राणों की रक्षा होती हो उसमें जूठन कुछ नहीं होता क्योंकि यह संसार एक-दूसरे में पिरोया हुआ है। यह प्राणीमात्र एक-दूसरे से पिरोया हुआ है, इसलिए वह एक सूत्र कहलाता है। परन्तु यह जो जल है यह पर्याप्त है, अन्न का अभाव है इसलिए मैं तुमसे प्राप्त कर रहा हूँ मैं प्राणों की रक्षा के लिए। परन्तु जल आत्मेय है इसलिए जल के लाने में जिसको मैं स्वतः कर सकता हूँ, उसका में आश्रित क्यों बनूँ? जो स्वतः क्रियाकलापों में ला सकता है वह जो दूसरों का आश्रित बनता है उसे शुद्र की संज्ञा प्रदान की गई है, वही शुद्र है जो अपने क्रियाकलापों से विभिन्न क्रियाओं में रत्त हो करके उसका आश्रित हो जाता है तो उसे शुद्र संज्ञा उपाधि प्रदान की जाती है। यह महर्षि अर्धभाग ने जब वर्णन किया तो हाथीवान बड़े प्रसन्न हो गए। इस उपदेश को पाकर

के कि मानव को अपनी भुजाओं से अपने क्रियाकलापों को स्वत करना चाहिए।

वहाँ से महर्षि जी ने उनके जूठे उड़द लेकर के अपने आश्रम में पहुँचे। पत्नी का कोई-कोई श्वास गति कर रहा था। जैसे उड़द उन्होंने प्रदान किए, पत्नी ने पान किए तो प्राणों की रक्षा हो गई। तो उदर में ''अब्रतं ब्रह्मे वाचा प्रवाहः'' यह अन्नाद जब पहुँचा तो जैसे सूर्य बकासुर के ओझल में आ जाता है और वह ओझल में आ करके तो उदय आक्रितम दर्पण समाप्त हो जाता है तो सूर्य अपने में प्रकाश देता है। सूर्य कान्ति को ले करके प्रकाश का द्योतक बना हुआ है। वह प्रकाश देता है और आनन्दवत् बनाता रहता है। तो जब इस प्रकार ऋषि ने अपनी पत्नी के प्राणों की रक्षा की।

अगले दिवस उन्हें कहीं से राजा अश्वपति के यहाँ से निमन्त्रण आया और निमन्त्रण में यह था कि आप हमारे याग के उद्गाता के आसन को प्राप्त करें। महात्मा अर्धभाग ने उसे स्वीकार कर लिया। अगले दिवस प्रातःकाल उन्होंने वहाँ से गमन किया। इससे पूर्व वह अपनी पत्नी से बोले कि मैं याग के लिए अश्वपति के याग में सम्मिलित होना चाहता हूँ, तुम अपने में प्रभु का चिन्तन करती रहो। **संसार को नाना रूपों में निहारने की आवश्यकता नहीं है,** क्योंकि प्राण प्रभु की प्रतिष्ठा रूप में परणित रहने वाला है, उन्होंने कहा कि मैं वृत्तियों में हूँ।

महात्मा अर्धभाग द्वारा उद्गाता व तीन व्याहृतियों की विवेचना

महात्मा अर्धभाग ने वहा से गमन करते हुए महाराजा अश्वपति के याग में परणित हो गए। यज्ञशाला विद्यमान है, निर्माणित हो गई है। उसमें एक आसन शून्यता में है, जिसको उष्णता का आसन कहा जाता है। महात्मा अर्धभाग ने उस आसन को ग्रहण किया। महाराजा

अश्वपति उपस्थित हुए और उन्होंने कहा–हे महात्मन्। आप किस आसन पर विद्यमान है, यह आसन किसका है? उन्होंने कहा, हे भगवन्! यह उष्णता का आसन है, मैं उद्गीत गाने वाला हूँ। मैं उद्गाता हूँ। उन्होंने कहा, उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उद्गाता उसे कहते हैं जो उद्गीत गाता है, जो वेद मन्त्रों को स्वरों से उद्धृत करने वाला है, जो स्वरों से गाता है। स्वर अपने में गम्भीर आत्मीय चिन्तन का एक विषय अनुपम रहा है, मैं उद्गाता के रूप में विद्यमान हूँ। जब उन्होंने यह वाक्य कहा तो राजा ने कहा कि यज्ञ का उष्णता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उष्णता उसे कहते हैं जो विशुद्ध रूपों से यज्ञशाला में जब आहुति साकल्य के साथ जो आहुति का प्रतिनिधित्व करने वाला है, वह मन्त्रों को गति से गाने वाला है। जिसका स्वर अन्तरिक्ष क्या द्यौलोक को प्राप्त हो जाता है, वह द्यौलोक में प्रवेश हो जाता है। वही तो द्यौलोक को ऊँचा बनाता है। पुनः महाराजा अश्वपति ने यह प्रश्न किया कि भगवन्! आप जो यज्ञशाला में विद्यमान हैं, आपने उष्णता के आसन को प्राप्त किया है। यह उद्गाता का आसन क्या कर रहा है? क्या कहता है? उद्गीत क्या है? यजमान को उत्तर देते उद्गाता ने कहा– भगवन् तीन प्रकार के विचार हमारे समीप होते हैं। एक भूः, एक भुवः और एक स्वः। यह तीन व्याहृतियों में परणित हो जाते हैं। सबसे प्रथम जिसमें गुरुत्व विद्यमान रहता है और द्वितीय जो भुवः है जिसमें तरलत्व परमाणु अपने में गति करता रहता है। और तृतीय स्वः कहलाता है जो गति को द्यौ से परणित करा देता है, वह द्यौ कहलाता है। वह स्वः द्यौ है और वह तरलत्व मध्यम है। वह जो गुरुत्व वाला है और वृत्तियों में वह भूः कहलाता है। ऋषि ने कहा–भूः भुवः स्वः ये तीन प्रकार के लोक कहलाते हैं। जब हम विज्ञान के आङ्गन में प्रवेश करते हैं या आध्यात्मिकवाद में जाते हैं, तो ये तीन प्रकार के परमाणु हैं जिन पर विज्ञान विद्यमान रहता है। गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी ये तीन प्रकार के परमाणु हैं। तेजोमयी का प्रतिनिधित्व करने वाला अग्नि कहलाता है

और उसका निर्माण अब्रिहीः आपोमयी ज्योति कहलाता है। गुरुत्व अपने में महानता की आभा का वर्णन कर रहा है, तीन प्रकार के भिन्न-भिन्न भेदन माने गए हैं परन्तु ये तीनों ही मूलरूप में तृतीय आभा में रत्त रहने वाले हैं।

जब महात्मा अर्धभाग ने अपना वर्णन किया, वर्णन करते ही ऋषि को राजा ने कहा-प्रभु। वह वाक्य तो हमें स्वीकार हो गया है। परन्तु हम यह जानना चाहते है कि भूः भुवः स्वः यह क्या है? मानव का अपना कर्त्तव्य है कि वाणी और अपने में क्रियाकलाप समाज के होने चाहिएँ। विशेषकर राजा के होने चाहिए। जिससे यह भूः भुवः स्वः यह पवित्र हो जावें, सत्य उच्चारण करने से सत्य क्रियाकलापों में परणित होने से उनका रूपण और रूपान्त अपृतियों में परणित होता रहता है। उन्होंने कहा यह जो तीन प्रकार का परमाणुवाद है, तीन प्रकार की जो प्रतिभा है। इसलिए यजमान भी तीन इषीआहों को प्रदान करता है। एक पुनरूक्ती है, एक पुनर्वाका है और एक वाचक कहलाता है। ये तीन प्रकार की आहुतियाँ यजमान अपने में प्रदान करता है। जिसमें स्वः उच्चारण होते ही वह अग्नि की धाराओं में प्रवेश करके द्यौलोक में जाता है। वही शब्द वायुमण्डल को ऊँचा बनाता है क्योंकि उसमें साकल्य है, उसमें सत्यवाद है, उसमें ऋतवाद है, ऋत में यह संसार एक-दूसरे से गुथा हुआ दृष्टिपात आता रहता है।

मैं तुम्हें गम्भीर क्षेत्रों में नहीं ले जाना चाहता हूँ, तो राजा मौन हो गए, ऋषि भी वाक्य उच्चारण करता हुआ मौन हो गया। राजा ने कहा ऋषिवर! कि हम यह और जानना चाहते है कि भूः का समन्वय कहाँ है भुवः का समन्वय किससे है, और स्वः का समन्वय किससे रहता है? ऋषि ने वर्णन करना प्रारम्भ किया कि भूः का समन्वय पृथ्वी रूप में परणित होता है, और स्वः का जो समन्वय है आपोमयी, उसका चन्द्रमा से समन्वय रहता है। इसलिए चन्द्रमा अमृत की वृष्टि करता रहता है।

स्वः का सम्बन्ध द्यौ से रहता है और द्यौ का समन्वय सूर्य से होता है, सूर्य नाना प्रकार की वृष्टि का मूल है। नाना प्रकार की ऊर्जा देकर संसार को प्रकाशमय बना देता है, रात्रि के अस्तित्व को समाप्त कर प्रकाश में ला देता है, सूर्य द्यौ से प्रकाश लेकर ऊर्ध्वा में बिखेरता रहता है। विचार-विनिमय क्या? हमारा वाक्य यह कह रहा है कि हमें सूर्य की आभा में द्यौ से प्रकाश ले करके द्यौ में अभ्योदय होता हुआ अपने से एक महानता का दर्शन होता रहता है। राजा बड़े प्रसन्न हुए और कहा, धन्य है, यह उद्गाता तो वास्तव में बड़ा योग्य अध्ययनशील है, चिन्तन में शील कहलाते हैं। राजा अश्वपति तो मौन हो गया।

इतने में उनकी पत्नी उपस्थित हुई और पत्नी ने कहा–हे उद्गातं ब्रह्मेः, हे आपनं ब्रह्मेः ऋषिवर अवर्तिहि, हे ऋषि अर्धभाग! जिस आसन पर तुम विज्ञान हो यह आसन किसका है? उन्होंने कहा–यह आसन उद्गाता का है, जो उद्गीत गाता है। उन्होंने कहा–उद्गाता कौन होता है? उन्होंने कहा–उद्गाता वह होता है जो वेद मन्त्रों की ध्वनि में ध्वनित हो जाता है। वही तो उद्गाता है, जो संसार के ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाला है और अपने में जो उसको ग्रहण करता है, अपने में जो धारण करता है वही तो उद्गाता है। वह उद्गीत रूप में गाता रहता है। पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई। देवी ने यजमान अब्रहेः उन्होंने कहा–ऋषिवर! आपका उत्तर यथार्थ है, परन्तु हम जानना यह चाहते है, यह जो उद्गीत गाने वाला है, इसका समन्वय किससे रहता है? उन्होंने कहा–जो उद्गीत गाने वाला है उसका समन्वय चन्द्रमा से होता है और चन्द्रमा का समन्वय सूर्य से होता है और सूर्य का समन्वय द्यौ से होता है और द्यौ का समन्वय अन्तरिक्ष से होता है और अन्तरिक्ष का समन्वय महत् तत्त्व से होता है, सबका तारतम्य एक-दूसरे से गुथा हुआ होने से हमारा जो समन्वय है वह चन्द्रमा से होता है, इसलिए चन्द्रमा सोम कहलाता है। जो सोम की वृष्टि करने वाला है। जो सोम में प्रवत्ति, स्थावर जो सृष्टि है, जो नाना प्रकार की वनस्पतियाँ हैं, उनमें जो रसों

का स्वादन करने वाला है, रसों को प्रदान करने वाला है, वह चन्द्रमा कहलाता है। ऐसे वाणी में रस आता है, वाणी में स्वर-ध्वनि होती है। ध्वनि में चन्द्रमा का समन्वय होता है। माता के गर्भस्थल में जब पुत्र होता है, शिशु होता है तो उसी चन्द्रमा का समन्वय तो माता के निचले भाग में चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है। उसका समन्वय पुरातत नाम की नाड़ी से है। पुरातत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से है। माता की लोरियों से पञ्चम नाम की नाड़ी बन करके, नाभि से नाभि का समन्वय हो करके वह सौम्य अमृत की वृष्टि कर रहा है।

मैं तुम्हें विज्ञान या शारिरिक विज्ञान में लाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह हमारा कि हम ''उद्गं वाले प्रावहः''। महात्मा अर्धभाग ने जब इस प्रकार उत्तर दिया तो राजलक्ष्मी मौन होने लगी और राजलक्ष्मी ने पुनः मौन होकर यह प्रश्न किया कि महाराज हम यह और जानना चाहते है, क्या ''मङ्गल ब्रहे'' यह जो उद्गाता का आसन है यह गीत गाता रहता है, यह किसका उद्गीत गाता है? उन्होंने कहा कि यह जो परमपिता परमात्मा की जो अमृतमयी वाणी है अथवा वेद-वाणी है उस वाणी का उद्गीत गाता रहता है और वाणी अपने में 'श्रद्धा वृतम् ब्रह्मेः' यह वाणी सत्य को उच्चारण करती रहती है। तो उद्गीत का समन्वय सत्य से होता है, सत्य का समन्वय प्रकृति से होता है, प्रकृति में जो चेतनामयी है वह परमपिता परमात्मा, है, इसलिए ब्रह्म सत्यम् है और प्रकृति जड़वत हो करके अपने में कृतास्व हो जाती है। जब ऋषि ने इस प्रकार उत्तर दिया तो ऋषि पत्नी अपने आसन पर विद्यमान हो गई। उसने कहा धन्य है ऋषिवर! आपका जो अध्ययन है वह बड़ा गम्भीर और मननशील है। जिसमें ब्रह्माण्ड समाहित हो जाता है। तो ऐसा एक विचार होता है वेद मन्त्रों का जिसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी में समाहित हो जाता है और ब्रह्माण्ड अपने में ब्रह्ममण्डत्व कहलाता है, जिसमें देखो नाना प्रकार के मण्डल एक-दूसरे से गुथे हुए हैं। जैसे एक माला है, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके हैं और वे एक सूत्र में

पिरोए जाते हैं। उस सूत्र और मनकों का समन्वय होकर एक माला बनती है। इसी प्रकार जितने भी मण्डल कहलाते हैं ये उस माला के मनके हैं। जितने भी लोक-लोकान्तर ब्रह्माण्ड हैं यह उसी परमपिता परमात्मा की माला और मनकों के सदृश कहलाता है।

आज का हमारा विचार कह रहा है, ''यागाम् मृतम् प्रवे'' वेद का मन्त्र कहता है ''यागाम् ब्रह्मे वाचे प्रवेः'' ''यागाम् ज्योत प्रवाह लोक'' याजकीय जो पुरुष होते हैं वे इस संसार व लोक को विजय कर लेते हैं। याग का अभिप्राय यह है कि संसार का जितना भी शुद्ध क्रियाकलाप है, शुभ कर्म है, आत्मीय चिन्तन है, आत्मीय कर्म है उस सर्वत्र का नाम याग के रूप में परणित किया गया है। वह सर्वत्र याग स्वरूप माना गया है। तो महात्मा अर्धभाग इस प्रकार अपना निर्णय देते हुए मौन हो गए। यजमान और उनकी पत्नी मौन हो गए और याग प्रारम्भ होने लगा।

पवित्र हृदय

अग्न्याधान करते हुए जब अग्नि में साकल्य प्रदान किया जाने लगा तो एक-एक आहुति द्यौ में प्रवेश हो जाती है। यदि यजमान का हृदय प्रायः पवित्र है, हृदय महान् है, वे हृदय श्रद्धामय ज्योति बन करके द्यौ में प्रवेश हो जाती है। द्यौ में उसकी प्रतिभा अपने में कृतियों में परणित हो जाती है। विचार यह कि हमारे जो हृदय शुद्ध क्योंकि हृदय में संसार सामाहित रहता है नाना प्रकार के रूप रस गन्ध को जो भी ग्रहण करता है उसकी स्थिति सब हृदयों में रहती है। इसलिए जब याजक बनता है तो उसे हृदय ग्राही बन करके हृदय में समिधा की ज्योति जागरूक करके उसे परमात्मा से समन्वय करके जब उन क्रियाकलापों में जब मानव रत्त हो जाता है तो एक आनन्दमयी ज्योति जागरूक हो जाती है। वही तो वायुमण्डल का शुद्धिकरण करता है। वहीं तो दूषित अनावरण आ जाता है, उसको वह दूर कर देता है।

विचार-विनिमय क्या, आज का हमारा वाक्य यह कहता है कि हम परमपिता के रचाए हुए ब्रह्माण्ड को चिन्तन में लाना प्रारम्भ कर दें। परमात्मा ने कैसा अनूठा जगत निर्माण किया है जो एक-दूसरे से कटिबद्ध हो रहा है। निर्णायक हो रहा है। आज का विचार कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम **इस संसार रूपी याग में से कुछ तो अपने चिन्तन में लाने का प्रयास करें जिससे हमारा मानवीयत्व पवित्रता की आभा में रत्त हो जाए।**

महात्मा अर्धभाग याग में सम्मिलित रहे परन्तु याग चलता रहा। बहुत समय तक याग अपनी आभा में रत्त होता रहा, याग की प्रतिभा अपनी महानता का प्रदर्शन करती रही। मुझे स्मरण आता रहता है, राजा अश्वपति का जब याग सम्पन्न हुआ, अथवा पूर्णता को प्राप्त होने लगा, जब पूर्णता को प्राप्त हो गया उनका याग, याग के बाद उसका प्रतिहार होता है। प्रीतिभोज होता है। **प्रीतिभोज का अभिप्राय यह होता है** कि जितने भी ऋषि-मुनि बुद्धिमान उस सभा मण्डप में आते हैं वे अपना-अपना विचार-विनिमय प्रगट करते रहते हैं। जो क्रियाकलाप है उसकी अपनी-अपनी उपप्राहारता अपने में प्रगट करते रहते हैं। जैसे याग सम्पन्न हुआ उस समय महाराजा अश्वपति ने अपना वक्तव्य देना प्रारम्भ किया है मेरा जो यह याग कराने का अभिप्राय है, हमारे यहाँ यह अश्वमेध क्या हमारे यहाँ वाजपेयी याग कहलाता है। वाजपेयी याग का अभिप्राय यह कि जहाँ जिस राजा के राष्ट्र में गौ हों। जिस राजा के राष्ट्र में गऊ के बछड़े विरख बन करके पृथ्वी के अन्न इत्यादि में सहायक बन करके अपने को समर्पित कर देते हैं। जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाए उसको हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग वाजपेयी यागों में परणित किया गया है। महाराजा अश्वपति ने याग के सम्पन्न होने के पश्चात् उन्होंने सब का आतिथ्य किया और कहा धन्य है भगवन्, मेरे यहाँ बुद्धिमानों के समूह

ने आ करके मेरे याग को सम्पन्न कराया है। उपदेश देना आरम्भ करते हैं। महात्मा अर्धभाग से यह प्रार्थना की कि महाराज आज कुछ उच्चारण कीजिए। उन्होंने कहा कि आज जो याग हुआ है यह याग इसको यथा याग कहते हैं। यह पृथ्वी का शोधन करने वाला है। इसकी तरङ्गें वायुमण्डल में प्रवेश होती हैं। द्यौ इन्हें स्पर्श करता है। वह वृष्टि का मूल बन करके यहाँ वृष्टि करा करके नाना अन्नादि और खनिजों के मूल में विद्यमान हैं। यह उच्चारण करके वह मौन हो गए। जो ब्रह्म बने हुए थे यज्ञ के स्वामी ऋषि महाराज ने कहा कि मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ। ऐसा राजा जिस राजा के राज में यागों का वृत्त होता है। जिसमें रूढ़िवाद का विनाश होता हो। याग भी रूढ़ियों से रहित होता हो। ऐसा याग प्रायः संसार को ऊँचा बनाता है। राष्ट्र और प्रजा को महानता की वेदी पर ले जाता है। यह उच्चारण करते हुए अपने विचार देते हुए याग अपने में सम्पन्न हो गया। याग अपने में उद्गम ब्रह्मेः एक हमारे यज्ञ में चार आसन होते हैं। सबसे प्रथम यजमान, ब्रह्मः, उद्गाता और अध्वर्यु कहलाता है। एक पुरोहित कहलाता है जो पराविद्या को प्रदान करने वाला है, पराविद्या यजमान को पवित्र बनाती है।

मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज का विचार केवल यह है हमारा जो जीवन है वह यागमय है। हमारे जितने क्रियाकलाप हैं वे यागों में परणित रहते हैं। जैसे परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी राष्ट्र का निर्माण किया है। इस यज्ञमयी संसार का निर्माण किया है। वह निर्माणवेत्ता है, महान् है, पवित्र है, आभा में नियुक्त कहलाने वाला है। हम परमपिता परमात्मा जो सम्राट है, सम्राटों का भी महान् सम्राट कहलाता है। हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने को ऊँचा बनाते हुए उसकी संसार रूपी यज्ञशाला को जानते हुए प्रेरणा पाकर अपने जीवन को प्रेरणादायक बना करके संसार से पार होना चाहिए।

आज का हमारा यह वाक्य समाप्त होने जा रहा है। आज के हमारे वाक्य के उच्चारणा करने का अभिप्राय तुमने जान लिया होगा परन्तु महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्य गुरुदेव! अपने में एक गम्भीर सागर में अपने को ले जा रहे थे और हमें भी अनुभव हो रहा था कि हम कैसे अनुपम महान् सागर में चले गए हैं जहाँ सागर और गागर की चर्चाएँ कीं। उन्होंने अपने वाक्य याग के सम्बन्ध में दिए, परम्परागतों से बड़ा अध्ययन है। ऋषि-मुनियों का भी बड़ा गम्भीर अध्ययन रहा है। आज का हमारा वाक्य इस सम्बन्ध में जो चयन करने के लिए आए हैं, आज जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहाँ प्रायः सामयाग सम्पन्नता को प्राप्त हुआ है। हमारा बड़ा सौभाग्य है हमारा अन्तरात्मा जो संसार को दृष्टिपात कर रहा है। यह संसार तो वाममार्ग, वाममार्गियों का व्यूह कहलाता है। जहाँ दूसरे के रक्त को पान किया जाता है, यह संसार वाममार्ग कहलाता है। परन्तु ऐसे वाममार्गी काल में यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके हुत कर रहा है। वायुमण्डल में अपनी भावना अथवा श्रद्धा याग के द्वारा परणित कर रहा है। मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है यजमान के जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मेरी सदा यह कामना रहती है, यजमान अपने में महान् बना रहे। क्योंकि हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ही यागों का क्रियाकलाप माना गया है।

आधुनिक काल

आधुनिक काल जो चल रहा है यह बड़ा विचित्र काल है इस काल में अज्ञान की आभा रत्त हो रही है विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है। विज्ञान के दुरुपयोग होने से यह ''विज्ञान ब्रहे'' यह वाममार्ग का

कुम्भ संसार मुझे दृष्टिपात आता है। वाममार्गी कौन होते हैं जो उल्टे मार्ग पर अपनी गतियाँ करते हैं, उल्टे मार्ग को अपनाते हैं जैसे आहार, व्यवहार दोनों में अशलीलता का नाम ही वाममार्ग है। अशुद्ध पान करना, नाना प्रकार के मांस का भक्षण करना, नाना प्रकार के अशुद्ध भोजन को ग्रहण करना है उनकी वाममार्ग की प्रवृत्ति बन जाती है, आज वाममार्ग के काल में भी मैं अपने यजमान को हे यजमान! इस वाममार्ग में मैं तुम्हारे जीवन के सौभाग्य की कामना करता रहता हूँ। आज के क्रियाकलाप में परणित हो आधुनिक काल का विज्ञान कह रहा है कि प्रदूषण आ रहा है, कि प्रदूषण कुछ समय के पश्चात् बीस वर्षों के पश्चात् ऐसा बन जाएगा कि श्वास लेने मात्र से भी प्राणान्त हो सकता है। ऐसा विज्ञानवेत्ता कहते हैं।

मैं कहता हूँ कि संसार के प्राणियों को चाहिए कि ऐसा परमाणुवाद अपने में ग्रहण करने को तत्पर हो जावें जिससे यह प्रदूषण समाप्त हो जाए। याग ऐसा क्रियाकलाप है तो याग क्योंकि याग में वाणी का शुद्धीकरण हो रहा है। वेद मन्त्रों के शब्द एक माला बन करके अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं। शुद्धीकरण हो रहा है जितने भी मानव सत्य उच्चारण करने वाले जिस काल में होते हैं, उतना वायुमण्डल पवित्र होता है। जितना अशुद्ध उच्चारण करने वाले प्राणी होते हैं उतना यह वायुमण्डल अशुद्ध हो जाता है। इसलिए सत्य उच्चारण करना आत्मीय विचारों को अपनाना धर्म और मानवीयता को अपनाते हुए रूढ़िवाद को समाप्त करना जिसके मूल में सर्वप्रथम रूढ़ि कहलाती है। राजा को चाहिए राजन् तेरे राष्ट्र में ये नाना प्रकार की रूढ़ियाँ धर्म का विनाश कर रही हैं। और धर्म जब नहीं रहेगा और रूढ़ि पनपती रहेगी, तो राजा के राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्तियों का संचार होता रहेगा। तो विचार क्या मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करते हुए कहा था कि धर्म रक्त नहीं बहाता है केवल रक्त का शोधन करता है। रूढ़ियाँ रक्त को बहाती हैं और रक्तभरी क्रान्ति

उत्पन्न हो जाती है। वही राष्ट्र के लिए घातक है। समाज के लिए और सामाजिक व जो मानवीय शक्तियाँ हैं उनको नष्ट कर देती है। विशेष चर्चा न देता हुआ केवल पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय देने के लिए आया हूँ, राजा तो अपने राष्ट्र में अग्निष्टोम व वाजपेयी याग कराते हैं, आधुनिक काल का जो राष्ट्रवेत्ता है, वह याग से शत्रुता कर रहा है। पुरातन में वह राजा अश्वपति जलों का पान करते थे। आधुनिक काल का राजा नाना प्राणियों को अग्नि में तपा करके उसका पान कर रहा है और राष्ट्र की प्रतिभा को नष्ट कर रहा है। मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि हे यजमान! ऐसे वाममार्ग के काल में तेरे हृदय में याग की शुद्धीकरण की जो प्रतिभा का जो जन्म होता है यह सदैव बनी रहे और तुम्हारा सौभाग्य बना रहे। इसके पश्चात् मैं गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी के हृदय में एक बड़ी दाह रहती है वह राष्ट्र को पवित्र देखना चाहते हैं। आज का वाक्य समाप्त, समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। अब वेदों का पठन-पाठन।

वेद पाठ.....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः।

दिनाँक : 3 मई, 1987

स्थान : प्रेमपुरी, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जहाँ विचार नहीं मिलते वहाँ का स्वार्थ भी समाप्त नहीं होता।
2. एकता उसी काल में आ सकेगी जहाँ संस्कृति एक होगी भाषा एक होगी।
3. मानव के जो विचार उत्पन्न होते हैं वह धर्म से होते हैं, संस्कृति से होते हैं।
4. उसी संस्कृति से मानव के विचार ऊँचे बनते हैं जहाँ शिक्षालय में ऊँची संस्कृति होती है।
5. संस्कृति उसी को कहते हैं जहाँ सदाचार और मानवता एक ही आङ्गन में निर्णय की जाती हो।
6. हमारी संस्कृति परम्परा से है जो ऋषि-मुनियों की प्रणाली है।
7. जहाँ विचारों में शुद्ध क्रान्ति, महान् क्रान्ति, कर्तव्य पारायणता और एकता होती है वहाँ विजय अवश्य होती है।
8. परमात्मा सबका रक्षक है। परमात्मा ही मनुष्य की रक्षा करता है।
9. अवतार उसे कहते है जो परमात्मा के निकट आने जाने वाली आत्मा हो।
10. जो मानव परमात्मा से भयभीत होता है वह संसार में ऋषि बन जाता है।
11. परमात्मा से भयभीत होने वाले व्यक्ति को न तो दूसरों से घृणा होती है और न दूसरों की निन्दा करता है।
12. जो मानव केवल समाज के कल्याण की बात विचारता है, घृणा की नहीं, क्रोध की नहीं वह मानव कामुक नहीं होता, उसे परमात्मा से भय होता है।
13. समाज को उस राजा को चुनना चाहिए जो त्याग और तपस्या में रहने वाला हो।
14. सब बुद्धिमान ब्राह्मणों को श्रेष्ठ राजा चुनना चाहिए।
15. जब तक त्यागी तपस्वी नहीं बनेंगे इस राष्ट्र और समाज का कल्याण कदापि नहीं होगा।
16. शुद्ध और पवित्र कार्य अन्तर भावनाओं से करो।
17. परमात्मा मानव के अन्तःकरण की भावनाओं का आहार करता है उसी के अनुकूल फल देता है।

विशेष सूचना

वैदिक अनुसन्धान समिति के सभी आजीवन सदस्यों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि समिति की **साधारण सभा की आगामी बैठक दिनाँक 8-9-2018** दिन रविवार को, **ए-84 मालवीय नगर, दिल्ली-110017** में प्रातः 11.00 बजे प्रारम्भ होगी। जिसमें समय पर भाग लेने का कष्ट करें। सभा में निम्न विषयों पर विचार-विमर्श होगा–

1. पिछली आम सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
2. पिछले वर्ष के आय-व्यय की समीक्षा और नए वर्ष के अनुमानित आय-व्यय पर विचार।
3. प्रकाशन सम्बन्धी सभी विषयों पर विचार-विमर्श।
4. समिति के संविधान व कार्य प्रणाली में आवश्यक संशोधन पर विचार-विमर्श।
5. अन्य प्रश्न प्रधान जी की अनुमति से।

मन्त्री वैदिक अनसुन्धान समिति

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज नास्तिक तो यह कह रहा है कि जिसे, महादेव पुकारा जा रहा है। वह क्या पदार्थ है। वह इस आत्मा से जाना जाएगा। वह महादेव ऐसा पदार्थ नहीं जिसको हम तुमको स्पष्ट निर्णय करा दें। परन्तु समक्ष देखना है तो पूर्व तू अपने को जान और अपने को देख कि मैं कौन हूँ और कैसा हूँ। मैं आज जब अपने नेत्रों को नहीं देख सकता, तो उसको कैसे देख सकता हूँ। बिना विज्ञान के, बिना प्रकाश के जब मेरे में इतना प्रकाश नहीं कि मैं अपने नेत्रों को ही देख सकूँ, और आज हम उस महादेव को देखना चाहते हैं। वह महादेव तो उस महान अनुपम की कृपा से देखा जाएगा, जब तुम्हारा आत्मिक बल चढ़ जाएगा। मानवता विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाएगी। तो हम आध्यात्मिक विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाएँगे।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 563
अगस्त 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-08-2019
Published on 5th day of the same month